पाठ 11 शाप-मुक्ति

मुख से –

क) लेखक डॉ. प्रभात के पास क्यों गए थे?

उत्तर- लेखक डॉ. प्रभात के पास उनकी दादी की आंखों की जांच के लिए गए थे।

ख) डॉ. प्रभात की मुस्कान क्यों लुप्त हो गई ?

उत्तर- डॉ. प्रभात को लेखक ने अपने बचपन का मित्र मंटू बताया तो दादी का चेहरा देखकर डॉ. प्रभात की मुस्कान लुप्त हो गई।

ग) 'डॉ. प्रभात वकील का बेटा मंटू है,'यह सुनकर दादी ने क्या कहा?

उत्तर- "दादी ने कहा कि अब इसके पास दोबारा आने की ज़रूरत नहीं। मैं इस दुष्ट के हाथों अपनी आंखें नहीं फुड़वाऊंगी।"

घ) मंटू आक के पौधे के पास क्या कर रहा था?

उत्तर- मंटू आक के पौधे के पास, कुत्ते के पिल्ले को अपने घुटनों में दबाकर, उनकी आंखों में उस पौधे का दूध डाल रहा था।

कलम से

क) लेखक ने डॉ. प्रभात को कैसे पहचाना?

उत्तर- लेखक को डॉ. प्रभात की हंसी जानी पहचानी लगी और फिर ध्यान से देखने पर उनका चेहरा भी परिचित लगा।

ख) मंटू ने पिल्लों की आंखों में आक का दूध क्यों डाला था?

उत्तर- आक का दूध डालने से पिल्ले अंधे होते हैं या नहीं, यह जानने के लिए मंटू ने उनकी आंखों में आक का दूध डाला था।

ग) दादी डॉ. प्रभात से आंखों का इलाज करवाने को तैयार क्यों नहीं थीं?

उत्तर- दादी डॉ. प्रभात से आंखों का इलाज करवाने को तैयार नहीं थीं, क्योंकि बचपन में प्रभात ने कुत्ते के पिल्लों की आंखें आक का दूध डालकर फोड़ दी थीं।

घ) डॉ. प्रभात ने दादी को कैसे मनाया? संक्षेप में लिखिए।

उत्तर- डॉ प्रभात स्वयं दादी के पास उन्हें मनाने गए और बताया कि आप पिल्लों की आंखें फोड़ने के बाद मुझे हमेशा कहती थीं कि तुम्हारी भी आंखें फूटेंगी, इसलिए आंखों का डॉक्टर बनकर हजारों लोगों को रोशनी दे दूं। मेरी आंखें फूटे उससे पहले दादी की आंखों का इलाज करूंगा। इससे दादी द्रवित हो उठीं।

ङ) डॉ. प्रभात के प्रायश्चित से क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर- डॉ. प्रभात के प्रयाश्चित से हमें प्रेरणा मिलती है कि गलती को सुधारने के लिए दिल से प्रयत्न करना चाहिए। थोड़े से आनंद के लिए किसी प्राणी के जीवन को कष्ट में डालना अनुचित है। अनुचित करने पर अपराध बोध होने पर प्रायश्चित करना चाहिए।

च) 'शाप-मुक्ति' शीर्षक की सार्थकता अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- पाठ की सभी घटनाएं, पिल्लों का अंधा होना, दादी का मंटू (डॉ. प्रभात) को आंखें फूटने का शाप देना, बाद में दादी का आंखों के इलाज के लिए डॉ. प्रभात के पास पहुंचना और इलाज से इनकार करना और डॉक्टर प्रभात का स्वयं दादी से अनुनय-विनय करना जीवंत- सी लगती है। डॉ. प्रभात कहता है कि वह प्रायश्चित के लिए हजारों लोगों की आंखों की रोशनी देने का प्रयास कर रहा है। उसके बाद दादी उसे आशीर्वाद देती हैं कि उसकी आंखों में सदा प्रकाश बना रहे। इस प्रकार 'शाप-मुक्ति' सटीक एवं सार्थक शीर्षक है। -

---